ISSN-0974-0118

मेकल मीमांसा

अंतर-अनुशासनात्मक डबल ब्लाइंड पीयर रिव्यूड यूजीसी केयर सूचीबद्ध अर्धवार्षिक शोध पत्रिका
वर्ष-13, अंक-01 जनवरी-जून-2021

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय
अमरकंटक (म.प्र.)

ISSN-0974-0118

मेकल मीमांसा

अंतर-अनुशासनात्मक डबल ब्लाइंड पीयर रिव्यूड यूजीसी केयर सूचीबद्ध अर्धवार्षिक शोध पत्रिका

वर्ष-13, अंक-01 जनवरी-जून-2021

संरक्षक

प्रोफेसर श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी, कुलपति
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय
अमरकंटक, मध्य प्रदेश

प्रधान सम्पादक

प्रो. राघवेंद्र मिश्रा, प्रोफ़ेसर, पत्रकारिता और जन संचार विभाग

कार्यकारी सम्पादक

प्रो. ज्ञानेंद्र कुमार राउत, प्रोफ़ेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग
डॉ. टी. श्रीनिवासन, प्रोफ़ेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग

सम्पादक मण्डल

डॉ. गौरी शंकर महापात्र, सह-प्राध्यापक, जनजातीय अध्ययन विभाग
डॉ ललित कुमार मिश्र, सह-प्राध्यापक, मनोविज्ञान विभाग
डॉ नीरज कुमार राठौर, सह-प्राध्यापक, संगणक विज्ञान विभाग
डॉ. एन सुरजीत कुमार, सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान और मानवाधिकार विभाग
डॉ. राहिल यूसुफ ज़ई, सहायक प्राध्यापक, व्यवसाय प्रबंध विभाग
डा. बिमलेश सिंह, सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग
डॉ. हरजीत सिंह, सहायक प्राध्यापक, भाषाविज्ञान विभाग
डॉ. ऋषि पालीवाल, सहायक प्राध्यापक, भैषजिक विज्ञान विभाग
डॉ. पूनम पांडेय, सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
डॉ. आशुतोष कुमार, सहायक प्राध्यापक, भूविज्ञान विभाग

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय
अमरकंटक, मध्य प्रदेश

मेकल मीमांसा
अंतर-अनुशासनात्मक डबल ब्लाइंड पीयर रिव्यूड यूजीसी केयर सूचीबद्ध अर्धवार्षिक शोध पत्रिका
वर्ष-13, अंक-01 जनवरी-जून-2021

इस अंक में

क्रम संख्या	लेख का शीर्षक	योगदानकर्ता	पृष्ठ संख्या
1.	प्रेमचंद और निराला के कथा साहित्य में नारी चिंतन का तुलनात्मक स्वरूप	स्व. प्रो. तीर्थेश्वर सिंह	01 - 08
2.	महिलाओं पर बढ़ते अत्याचार के उत्तरदायी कारणों का विश्लेषण	प्रो. घनश्याम शर्मा	09 - 15
3.	जनसंचार माध्यमों में सत्याग्रह की समझ	डॉ. अमित राय	16 - 24
4.	इंटरजनरेशनल जस्टिस और इको फेमिनिज्म	डॉ. चित्रा माली	25 - 31
5.	राजस्थानी लघु चित्रों में लोक जीवन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. शैलेन्द्र कुमार	32 - 40
6.	भारतीय जाति व्यवस्था - गाँधी एवं अम्बेडकर	डा. राजीव कुमार सिंह एवं डा. नरेश कुमार सोनकर	41 - 52
7.	मध्य भारत में आदिवासी राजनीतिक नेतृत्व का स्वरूप : मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में	डॉ. अनिल कुमार एवं डॉ. मंजीता पटेल	53 - 68
8.	शिक्षा एवं आदिवासी महिला सशक्तिकरण एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. कुशल जैन कोठारी, अनिता चौहान	69 - 83
9.	इन्टरनेट उपभोक्ता युवाओं में वेब-सीरीज की लोकप्रियता एवं प्रभावशीलता : एक अध्ययन	डॉ. सुनील कुमार मिश्र	84 - 96
10.	भारतीय संचार: संस्कार, संस्कृति और भाषा से समृद्धि	डॉ. योगेश कुमार गुप्ता	97 - 108
11.	उच्च शिक्षा के नवीन आयाम एवं मीडिया शिक्षण. नई शिक्षा नीति के संदर्भ में	डॉ. राम प्रवेश राय	109 - 118
12.	योग दर्शन में तप एवं तपोजा सिद्धि	डॉ. गोविन्द प्रसाद मिश्र	119 - 129
13.	पूर्वी उत्तर प्रदेश तराई में थारू जनजाति की साक्षरता का स्थानिक स्वरूप	डॉ. संजीव कुमार सिंह, डॉ. अभिषेक सिंह, सीमा सिंह	130 - 142
14.	पादप संरक्षण में ऊतक संवर्धन तकनीक की भूमिका	डॉ. मनोज कुमार राय, रोशनी राठौर	143 - 156
15.	बुन्देलखण्ड के प्राचीन दुर्ग: एक अनुशीलन	डॉ. मोहन लाल चढ़ार	157 - 173
16.	भारत-बांग्लादेश संबंध के 50 वर्ष: एक ऐतिहासिक मूल्यांकन	डॉ. सोनाली सिंह	174 - 182

भारतीय संचार: संस्कार, संस्कृति और भाषा से समृद्धि

डॉ. योगेश कुमार गुप्ता*

सारांश

संचार संबंधी भारतीय अवधारणा प्राचीन समय से ही रोचक और दिलचस्प रही है। हालांकि आधुनिक संकल्पना में अंतर्राष्ट्रीय संचार एवं संवाद की बात जोर-जोर से की जाती है जो भारतीय चेतना और स्मृति में गहरी और व्यापक है। भारतीय जीवन में ज्ञान की उपलब्धता कई मायनों में अतुलनीय है। भारतीय संस्कृति, संस्कार, भाषा और इसके ज्ञान ने हमेशा से ही विश्व को मानव कल्याण के लिए प्रेरित किया है।

भारतीय वेद, धर्म, संस्कार, ज्ञान, विधा और विचारधाराएं प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति के विकास का इतिहास-धर्मों के विकास और उनके स्वरूपों के प्रत्यक्ष में आने की एक गहरी परंपरा का इतिहास हैं। संस्कृति निर्माण की प्रक्रिया में भाषा की भी उतनी ही भूमिका रही है, जितनी संचार माध्यमों की बल्कि संचार माध्यम ही अब यह तय करने लगे हैं कि किसी भाषा का कलेवर क्या होगा? प्रस्तुत शोध-पत्र भारतीय संचार, संस्कार, संस्कृति और भाषा के नाभि-नाल संबंध को दर्शाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में संचार माध्यमों की दशा व दिशा, भाषा, संस्कार की वजह से विकसित हो रही नई संस्कृति का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

बीज शब्द - संचार, संस्कार, संस्कृति, भाषा

प्रस्तावना

ईश्वर ने सृष्टि के सभी तत्वों का समावेश मानव की कृति में किया है। मनुष्य ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति एवं अभिव्यक्ति है। मानव जीवन में संचार की प्रक्रिया जन्म से ही प्रारंभ हो जाती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और सामाजिक जीवन में संचार अत्यधिक महत्वपूर्ण है। संचार के व्यापक सूत्र प्राचीन संस्कृतियों से लेकर वर्तमान सामाजिक परिवेश में अपनी परिभाषा बदलते रहे हैं। वर्तमान परिस्थिति पर नजर डाली जाए तो ईश्वर की यह सुंदर कृति 'मानव' की स्थिति आज क्या है? इसे समझना बहुत मुश्किल है, क्योंकि एक ओर तो हम संपूर्ण मानवता की दुहाई देते हैं और वहीं दूसरी ओर मानव का निजी स्वार्थ और अहंकार है। संपूर्ण मानवता की भलाई के लिए आवश्यकता है कि हम संपूर्ण मानव के ज्ञान और उपलब्धियों को साथ लेकर आगे बढ़ें (परमार, 2015)। ज्ञान का विकास,मनुष्य की उत्कृष्टता, सभ्यता का विकास, मानव को सभ्य बनाने के लिए किया गया प्रयास संचार है। मनुष्य का परिष्कार, समाज निर्माण, समाज उत्थान, पुनर्जागरण, मूल्यों की स्थापना, ज्ञान

* लेखक नव मीडिया विभाग, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला में सहायक प्राध्यापक हैं।

का विकास, विज्ञान का विकास, मिशन के लिए किया गया संवाद संचार है। संचार में मूल्यों की स्थापना के लिए संवाद की प्रक्रिया है। मानवीय मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए संवाद का होना जरूरी है। व्यक्ति और समाज को उत्कृष्ट बनाने की प्रक्रिया संचार है। भारतीय जीवन दृष्टि में संचार को माध्यम बनाकर समाज में फैली विषमता और भेदभाव को समाप्त करने की एक सार्थक पहल की गयी है और समाज के सभी वर्गों को एक माला में पिरोने का कार्य किया गया है। वेदों का गहन अध्ययन कर उन्हें सरल बनाने का प्रयास किया गया ताकि वेद जनमानस के लिए व्यवहारिक हो सकें। 'वसुधैव कुटुंबकम' के दर्शन के माध्यम से संपूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में मानना, सभी प्राणियों में प्रभु का वास मानकर सब के साथ एक सा व्यवहार एकात्मवाद का प्रमुख उद्देश्य था (पटेल ,2020)।

संचार और सूचना क्रांति ने विश्व मानवता को 'विश्वग्राम' में बदल दिया है। तकनीकी क्रांति ने समाज, संस्कृति, जन और राष्ट्र को गहरे तक प्रभावित किया है। नागरिक और राष्ट्र के जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में नई-नई संरचनाओं और अवधारणाओं का उदय हो रहा है। इस परिप्रेक्ष्य में संचार और भारतीय संस्कृति के अंतर्संबंधों को समझने की आवश्यकता है। हमेशा से समाज की विकास यात्रा में संचार, संस्कार, संस्कृति और भाषा निरंतर सहयात्री रहे हैं। इनकी गतियों में भिन्नता जरूर रहती है लेकिन यह यात्री एक दूसरे के पूरक भी होते हैं और एक दूसरे की पहचान को अपने-अपने प्रकार से प्रतिबिंबित भी करते हैं। सारांश में यह अविभाज्य हैं। राष्ट्र-राज्य के निर्माण में संचार, संस्कृति और भाषा ने नि:संदेह ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। यद्यपि भूमंडलीकरण के दौर में बहुत कुछ तेजी से बदलता जा रहा है। यूनेस्को के अनुसार निर्बल और पिछड़े समाजों की संस्कृति और भाषाएं लुप्त होती जा रही हैं। संचार, संस्कृति और भाषा के नए समीकरण बन रहे हैं। सभी को बाजार से जोड़ा जा रहा है (जोशी ,2015)।

21वीं सदी का प्रारंभ सूचना और संचार माध्यमों में क्रांतिकारी परिवर्तन से हुआ, जो दशक की समाप्ति के बाद सर्वव्यापी हो गया। इस तथ्य में तनिक अतिश्योक्ति नहीं है कि संचार माध्यम के विकसित होने से ही सूचनाएं सुदूर पलक झपकते ही पहुंच रही हैं। मानवीय मूल्यों की दृष्टि से देखें तो हमारे संस्कार, शिष्टाचार धीरे-धीरे मिट रहे हैं। एक लाइक करके सूचनाओं को अग्रसारित और शेयर करके युवा वर्ग अपने शिष्टाचार से विमुख हो रहा है। ऐसे में अपने संस्कारों को संरक्षित करने और सही-गलत की पहचान करने वाली समझ विकसित कर अपने नैतिक मूल्यों को संवर्धित करने की आवश्यकता है ताकि विकसित तकनीकी ज्ञान को बुद्धिमतापूर्ण ढंग से अपनाकर देश की संस्कृति और तकनीक दोनों को पुष्पित व पल्लवित किया जा सके (जागरण,2016)।

बाजार आज हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। दरअसल हमारा समाज और

बाजार एक दूसरे से जुड़े हैं। विश्व बाजार के सांस्कृतिक पहलुओं को भारतीय समाज की अंदरूनी तहों में प्रवेश कराने में संस्कारों की विशिष्ट भूमिका बन गई है। 21वीं सदी में निश्चय ही हम एक अधिक सघन बहुसांस्कृतिक परिवेश में रहते हैं, जहां संस्कृतियां एक दूसरे से घुल-मिल रही हैं। तेजी से भागती दुनिया में थोड़ा ठहरकर सोचना होगा कि यह सांस्कृतिक सम्मिश्रण है या सांस्कृतिक आत्मविसर्जन। हमें निश्चय ही दोनों में फर्क करना होगा। सांस्कृतिक आत्मविसर्जन का विरोध करना है और सांस्कृतिक विविधता और सम्मिश्रण के पक्ष में खड़ा होना है। निश्चय ही आज के आधुनिक जीवन का असली उद्देश्य सांस्कृतिक जड़ों से विच्छिन्न होना कहीं से भी इस जीवन के हित में नहीं है (कुमावत:,www.rsaudoi.org.)।

भारतीय जीवन दृष्टि एवं संचार माध्यम

कोई भी वैज्ञानिक आविष्कार हो या दार्शनिक विचार उनकी सफलता इस बात में निहित है कि यह कितनी अच्छी तरह से समाज तक पहुंचता है। ग्रीक दार्शनिक अरस्तू ने कहा था, 'सद्गुणी व्यक्ति ही प्रभावी संचारक हो सकता है'। प्रभावी या महान संचारक वही है जो अपने कार्य विचार या चेतना से समाज में परिवर्तन का वाहक बने। अरस्तु के अनुसार ऐसे व्यक्ति का सद्गुणी होना आवश्यक है। तात्पर्य यह कि समाज में संचार तो हो लेकिन सद्गुण का, दुर्गुण का नहीं, सत का असत का नहीं, आलोक का तिमिर का नहीं, ज्ञान का अज्ञान का नहीं, विद्या का अविद्या का नहीं। भारत में ज्ञान की धारा सदियों तक गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से ही प्रवाहित होती रही है और इसका आधार वाचिक ही रहा। इसमें गुरु के मुख से निकले बोल शिष्यों द्वारा कंठस्थ कर लिए जाते थे, तत्पश्चात इसी अनुक्रम में वह अगली पीढ़ी तक संचारित होती थी। ज्ञान के संचार की यह व्यवस्था खुद में अनूठी थी। मुद्रित और दृश्य-श्रव्य माध्यमों के आने पर भी वाचिक परंपरा समाप्त नहीं हुई। हमारे ऋषि-मुनियों ने धर्म और ज्ञान को लेकर जो कुछ भी रचा, वह सदियों तक वाचिक परंपरा से ही सुरक्षित रहा और अग्रसारित भी होता रहा।

संचार का इतिहास मनुष्य के इतिहास से भी पुराना है। प्रकृति के हर स्वरूप में संचार दृष्टिगत है। हम किसी विचार या अनुभूति को स्वयं के अलावा किसी अन्य में बांटते हैं, हम संचार की प्रक्रिया में शामिल हो जाते हैं। अपनी बात अन्यों तक पहुंचाने की इच्छा ही संचार को जन्म देती है। मनुष्य जिस तरह विचारशील प्राणी है उसी तरह वह संचारशील प्राणी भी है। विचार है तो संचार भी उसके साथ जुड़ा है। किसी विचार का मस्तिष्क में आना भी संचरण ही है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि संचार में भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी, धर्म, अध्यात्म, दर्शन जैसी अनेक विधाएं मनुष्य की संचार शक्ति की ही उपज हैं। इस दृष्टि से संचार के कारण ही मानव सभ्यता का विकास एवं उसकी प्रगति

हुई है। प्रो. ओमप्रकाश सिंह अपनी पुस्तक 'संचार के मूल तत्व' में लिखते हैं कि "महामानवों का आभ्यंतर संचार ही जनसंचार में परिवर्तित होकर मनुष्य मात्र का दिग्दर्शन करता है। कहा जाता है कि आभ्यंतर संचार के जरिए जनसंचार से जुड़ना समाज की विराटता से जुड़ना है। यही मनुष्य की व्यापक और विराटता का आधार है (उपाध्याय , 2016)।

भारत में संचार माध्यमों की सबसे पहले शुरुआत नारद मुनि से मानी जा सकती है। देवर्षि नारद घूम-घूम कर संवाद-वहन करने वालों में अग्रणी थे। सही मायनों में देवर्षि ने संचार के माध्यम से सामाजिक पुनर्रचना का कार्य किया। देवर्षि ने सूचनाओं का आदान-प्रदान लोक हित को ध्यान में रखकर किया। लोक और जन की दृष्टि से विचार करने पर उनके अंतर्निहित भाव का बोध सहज ही हो जाता है। नारद ने 'वाणी' का प्रयोग किस प्रकार किया, जिससे घटनाओं का सृजन हुआ। नारद द्वारा प्रेरित हर घटना का परिणाम लोकहित में निकला। उनके संवाद में हमेशा लोक कल्याण की भावना रहती थी (पटेल, 2020)।

दिव्य चेतना, असाधारण आत्मबल और दृढ़ इच्छाशक्ति वाले व्यक्ति ही महान संचारक होते हैं, उनके संचार में पूरे विश्व को बदलने की शक्ति और संदेश होता है। उनके शब्दों में सहज, सरल, बोधगम्यता के साथ असाधारण शक्ति, गहन अर्थ और गंभीरता तथा घनीभूत चेतना होती है, जो मानव मात्र को न सिर्फ आंदोलित करती है, बल्कि उसे एक सकारात्मक दिशा देने काम भी करती है। हमारे यहां वेदों में संचार के संदेश तत्व का विस्तृत विवेचन है। ऋग्वेद में एक बुकयम कहने के प्रचार का वर्णन करते हुए कहा गया है कि, "भानुमद्धि: अर्के: सूर्य: न'- अर्थात तेजस्वी किरणों से जिस तरह सूर्य का प्रकाश फैलता है, उसी प्रकार मनुष्य ज्ञान को फैलाएं।" यद्यपि यह ज्ञान सत्य पर आधारित होना चाहिए। संचार के मूल में भी सत्य का संप्रेषण और उसकी जिज्ञासा ही है। व्यक्ति से लेकर समष्टि तक इसका दायरा फैला हुआ है। प्रभावी संचार मानव मात्र को बदलने की क्षमता रखता है। खासकर जब अनुभूति ही विचार रूप में परिणति होती है तो उसकी शक्ति कई गुना बढ़ जाती है (उपाध्याय, 2016)।

भारत में सामाजिक पुनर्रचना में संचार माध्यम

सामाजिक पुनर्रचना के निर्माण में संचार माध्यमों की अहम भूमिका रही है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि संचार माध्यम हमेशा से ही सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पुनर्रचना में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते आ रहे हैं। यदि किसी विचार, व्यक्ति, राजनीतिक, सांस्कृतिक मूल्यों या संस्कारों को बदलना है, तो संचार के बिना यह कार्य संभव नहीं है। संचार माध्यम समाजीकरण का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। समाजीकरण की सभी स्थितियों में संचार माध्यम की अपनी भूमिका होती है। संचार माध्यम परंपरागत मान्यताओं को पुष्ट कर सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों पर पैनी दृष्टि रखते हैं।

संचार माध्यम मनोरंजन और विकास का संदेश देकर संस्कृति के निर्माण में सहायक हैं। संचार माध्यमों का बाहुल्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान को तीव्रता प्रदान करता है, जो सांस्कृतिक विकास का सूत्रधार है।

इंटरनेट के हर हाथों में पहुंचने के बाद सोशल मीडिया ने सामाजिक पुनर्रचना के लिए एक अद्भुत संचार माध्यम की भूमिका निभाई है। फेसबुक, ट्विटर और यू-ट्यूब जैसे सोशल मीडिया के मंच अब सिर्फ मनोरंजन का माध्यम नहीं रह गए हैं, बल्कि इन मंचों के जरिए दुनिया भर के लोगों को अपनी बात कहने का मौका मिला है। सोशल मीडिया ने संचार बाधाओं को हटा दिया है और विकेंद्रीकृत संचार चैनल बनाया है और सभी को लोकतांत्रिक फैशन में अपने-अपने तरीके से भाग लेने के लिए दरवाजे खोल दिए हैं। यह मंच एक विस्तृत, विविध, औपचारिक, अनौपचारिक, राजनीति, जाति, स्वास्थ्य, रिश्ते आदि जैसे कई मुद्दों पर टिप्पणीकारों की एक विस्तृत श्रृंखला के साथ रचनात्मकता और सहयोग को बढ़ावा भी देता है। सोशल मीडिया से हमें अंतरराष्ट्रीय सीमाओं और सांस्कृतिक अवरोधों को तोड़ने की इजाजत मिलती है (पटेल, 2020)।

भारतीय संस्कार

भारतीय समाज संस्कारों का समाज है जो कि संस्कृति के झरोखे से दिखलाई देता है। भारतीय समाज में मानव जीवन आध्यात्मिकता से लेकर भौतिकवाद के मध्य समन्वय स्थापित करने की कड़ी मानी जाती है। यह संस्कार मानव जीवन में मनुष्य को अनेक उत्तरदायित्वों से जोड़ते हैं क्योंकि संस्कारों को धर्म एवं संस्कृति से जोड़कर ही सामाजिक एकता का प्रादुर्भाव संभव हो सकता है। इस वैचारिक परिप्रेक्ष्य में यह भी स्पष्ट किया गया है कि मानव की जिज्ञासु प्रवृत्ति अलौकिकता के वशीभूत होती है, जिसे समाज की धर्म व्यवस्था में एक विशेष स्थान प्राप्त है, वह इसलिए क्योंकि मनुष्य इन संस्कारों के द्वारा विशेष अवसरों के रूप में सामाजिक कर्तव्यों का निर्वहन करता है। संसार के किसी भी धर्म एवं संस्कृति को ले लीजिए, उसमें सामाजिक एकता को स्थापित करने के गुण होते ही हैं, जोकि विभिन्न संस्कारों की सहायता से मानव जीवन-दर्शन का न केवल बोध कराते हैं बल्कि नैतिक मूल्यों को भी स्थापित करते हैं।

संसार की कोई भी संस्कृति अपनी प्राचीनता के कारण भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जीवन में संस्कारों की महत्वपूर्ण भूमिका है। संस्कारों के द्वारा मनुष्य अपनी सहज प्रवृत्तियों का पूर्ण विकास करके अपना और समाज दोनों का कल्याण करता है। हमारे मनीषियों ने हमें सुसंस्कृत तथा सामाजिक बनाने के लिए अपने अथक प्रयासों और शोधों के बल पर यह संस्कार स्थापित किए थे, इसके पीछे ऐसी मान्यता है कि यह संस्कार इस जीवन में ही मनुष्य को पवित्र नहीं करते बल्कि उसके पारलौकिक जीवन को भी पवित्र बनाते हैं।

व्यक्ति जिस देश, समाज और परिवार में जन्म लेता है, उसी के अनुरूप व्यक्ति के जीवन में संस्कारों का बीजारोपण होना चाहिए। संस्कार अपने आप में अमूर्त होते हैं। यह व्यक्ति के आचरण से छलकते हैं। चरित्र निर्माण में धर्म और संस्कार महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सहिष्णुता, समन्वय की भावना, गौरवशाली इतिहास, संस्कार, रीति-रिवाज और उच्च आदर्शों के कारण भारतीय संस्कृति और संस्कार सर्वश्रेष्ठ विवेक हैं। विवेक और ज्ञान भारतीय संस्कारों की आत्म-भावना है। वर्तमान में व्यक्ति की बढ़ती जटिलताओं, मानसिक अशांति आदि का समाधान भारत की इस सत्य सनातन संस्कृति और संस्कारों में निहित है। किसी अज्ञात नामा मनस्वी के अनुसार, "मेरा आचरण मेरे कुल की संस्कृति को प्रकट करता है, मेरी भाषा मेरे देश की वाणी है, दूसरों के साथ सम्मान पूर्वक व्यवहार मेरे प्रेम का घोतक है, मेरे स्वस्थ शरीर की संरचना मेरे संतुलित भोजन का सूचक है। यह चारों गुण एक संस्कारवान व्यक्ति के नैतिक मूल्य हैं" (आर्य, 2018)।

भारतीय संस्कृति

मानव संस्कृति का संबंध ज्ञान, कर्म तथा रचना से है। इसका संवर्धन निरंतर बना रहे, इसलिए संस्कृति का संस्कार संपन्न होना अति आवश्यक होता है। भारतीय संस्कृति वैश्विक संस्कृतियों का मूल आधार है। हम पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति के इतिहास को पढ़ते और सुनते रहे हैं। जहां इस ग्रह पर करोड़ों वर्षों से जीवन के चिरस्थाई बने रहने की आधारशिला सृजन है, तो उसे अनवरत जारी रखने का स्तंभ उनकी संस्कृति है। जीवों के जीवन जीने की कला और कौशल ही, उसकी संस्कृति के नाम पर प्रचलित होती चली गई, जो जीवन के प्रति उनके समझ और संचित ज्ञान का कोष है। संस्कृति को परिभाषित करना अथवा संस्कृति के विषय में कुछ कहना स्वयं में एक जटिल कार्य है और जब बात भारतीय संस्कृति के विषय में हो तो वह अपनी विषमताओं को समेटे हुए निःसंदेह अद्भुत है।

ऐसी संस्कृति जिसके अनगिनत शब्द और उनके शब्दार्थ न केवल उसकी श्रेष्ठता के प्रमाण हैं, बल्कि उसकी व्याख्या भी करते हैं और उस संस्कृति का नाम सनातन अर्थात सदा बने रहने वाला आदिकाल से अनंत काल तक शाश्वत है। उसी सनातन के यह शब्द संस्कृति, संस्कार, संस्कृत और संचार इनके गहरे शब्दार्थ बहुत कुछ कहते हुए दिखते हैं। यह चारों शब्द आपस में जुड़े भी हुए हैं। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीन और सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है, जिसका मूल लक्ष्य शांति, सहिष्णुता, एकता, सत्य, अहिंसा और सदाचार जैसे मूल तत्व हैं। भारतीय संस्कृति परिवर्तनशील रही है। संस्कृति में कई उतार-चढ़ाव आए, कितनी ही संस्कृतियों का समागम हुआ, भारतीय संस्कृति इन सबका समन्वय कर चलती रही और कभी विलुप्त नहीं हुई।

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता इसकी निरंतरता, ग्रहणशीलता,

समन्वय, धार्मिक सहिष्णुता, सार्वभौमिकता एवं वसुधैवकुटुंबकम जैसे तत्व उसकी उत्कृष्ट विशेषताओं को परिलक्षित करते हैं। भारतीय संस्कृति के संचित ज्ञान कोष से विश्व को अनेकों सांस्कृतिक, साहित्यिक और वैज्ञानिक रचनाएं प्रदान की हैं। इन रचनाओं में 'आर्यभट्ट' द्वारा शून्य का आविष्कार, 'चरक' द्वारा आयुर्वेद की खोज, प्राचीन भाषा संस्कृत, योग, अध्यात्म आदि अनेकों सृजन हैं। भारतीय संस्कृति की रचनाओं ने विश्व पटल पर न सिर्फ अपनी अमिट छाप अंकित की है, बल्कि विश्व इन रचनाओं का पथ- प्रदर्शक स्वरूप अनुकरण कर इन्हें अपने जीवन में अपना रहे हैं। भारतवर्ष का इतिहास उसके वर्तमान से अदृश्य रूप से जुड़ा हुआ है। इसकी संस्कृति की जड़ें इतनी मजबूत और गहरी हैं कि समय का प्रवाह और आधुनिकता का प्रहार उसे समाप्त नहीं कर सका। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता इसकी निरंतरता और चिरस्थायिता है।

संस्कृति की निरंतरता और चिरस्थायिता को वर्तमान संदर्भ में देखें तो आज भी यह उतना ही विभूषित है, जितना सनातन काल में। भारतीय संस्कृति से उत्सर्जित 'वसुधैव कुटुंबकम' से हमने समस्त विश्व को जहां नजदीक लाकर एक बना दिया, वहीं 'अतिथि देवो भव:' की भावना से परायों को भी अपना बना लिया। हमारे वेदों ने भी इसका वर्णन किया है कि 'सा संस्कृति प्रार्थना विश्ववारा' जिसका अर्थ यह है कि संस्कृति संपूर्ण विश्व के कल्याण के लिए है। इस उत्कृष्ट भावना का ही प्रतिफल है कि जहां एक ओर अन्य समकालीन संस्कृतियां काल के गर्त में समा गईं, वहीं भारतीय संस्कृति वर्तमान में भी जीवंत है। हमारी संस्कृति आज भी विश्व के समक्ष आदर्श प्रस्तुत कर संपूर्ण भारतीय जनमानस को गौरवान्वित कर रही है।

इतनी विभिन्नताओं के बावजूद भारत अनेकता में एकता के सूत्र से बंधा ऐसा देश है जो अपने हर राज्य और हर प्रांत के निवासियों को सदियों से एक सूत्र में पिरोता आया है। संस्कृति, मानव जीवन की विधि या विधान का दूसरा नाम है। संस्कृति को विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है, परंतु कोई भी सर्वमान्य परिभाषा नहीं मिल पाई है बावजूद इसके एक बात जो मूल में है वह यह है कि मानव समूह के आंतरिक व बाह्य जीवन को एवं मानव की शारीरिक, मानसिक शक्तियों को संस्कारवान, विकसित और सुंदर बनाने की प्रक्रिया को संस्कृति कहा जा सकता है, जिसमें वह जीवन-यापन की परंपरा प्राप्त कर संस्कारित, सुदृढ़, प्रौढ़ और विकसित बनता है। भारतीय संस्कृति में अद्भुत शक्ति है। यह प्रतिकूल परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेती है। विचारों में अनंत मतभेद होने के बावजूद समानता को स्वीकार करता है। ऋग्वेद में इस संदर्भ का वर्णन करते हुए लिखा गया है कि, 'समान मंत्र, समान समिति, समान मन, सबकी प्रेरणा, समान सबके हृदय, समान सब की स्थिति।' भगवत गीता में समन्वय की बात कही गई है, गौतम बुद्ध ने भी समन्वय की

अवधारणा पर बल दिया है। हमारी संस्कृति भी यही दर्शाती है कि परस्पर प्रेम, सहानुभूति और एकत्व को स्थापित करके जीवन का श्रेष्ठ मार्ग प्राप्त किया जा सकता है। सैकड़ों वर्षों की हमारी गुलामी के कालखंडों के परिणामस्वरूप हम कई बार अपनी संस्कृति तथा परंपरा को अस्वीकार करते रहे हैं। यदि विश्व के अन्य देश तथ्यात्मक शोध के आधार पर हमारी परंपरा, संस्कृति को सही ठहराते हैं तो उसे अतिशीघ्र मान लिया जाता है। वर्तमान में हमें संकल्पित होने, भारतवर्ष की प्राचीन ज्ञान परंपराओं को वैज्ञानिक भाषा में संपूर्ण विश्व को समझाने पर जोर देना होगा। राष्ट्र की संस्कृति महज एक संकल्पना नहीं होती है, बल्कि यह एक गौरव की बात होती है, जो हम सभी में एक भारतीय होने के नाते होनी चाहिए। भारतीय संस्कृति और परंपराओं की जो विरासत हमारे हिस्से में आयी है, वह अन्य किसी भी देश को प्राप्त नहीं हुई है। इस विरासत को संभालना, जतन करना और इस पर गर्व करना हमारा परम कर्तव्य है। यह हमारा गौरव है कि हम एक ऐसे देश के नागरिक हैं जहां की संस्कृति एवं परंपरा इतनी प्राचीन और विकसित होने के साथ-साथ विभिन्नताओं से परिपूर्ण है। हमारी विभिन्नताओं और विविधताओं के कारण हम एक साथ विविध संस्कृतियों को अपने देश में ही देख सकते हैं (गुप्ता, 2020)।

ज्ञान-विज्ञान की जननी संस्कृति

संस्कृति को उन्नत बनाने में भाषा श्रेष्ठ माध्यम है। मातृभाषा में अध्ययन से मौलिक विचार उत्पन्न होते हैं। इससे भाषा का शब्द भंडार समृद्ध होता है। बदली हुई परिस्थितियों में मातृभाषा का महत्व और अधिक बढ़ गया है। भाषा में आत्मनिर्भरता से तेज गति से विकास होगा। भाषा के विकास का अध्ययन देश के नागरिकों के विकास के आलोक में होना चाहिए (नई दुनिया, 2020)।

हमारी आत्मा, हमारी अस्मिता, भारत की भारतीयता उसकी संस्कृति में निहित है, जिसका प्राण संस्कृत भाषा है। भारतीय संस्कृति के सभी पक्षों जैसे ऐतिहासिक, आर्थिक, धार्मिक, प्राकृतिक, राजनैतिक तथा कला, ज्ञान-विज्ञान आदि का सूक्ष्म तथा वास्तविक ज्ञान संस्कृत भाषा के माध्यम से ही हो सकता है। संस्कृत भाषा की प्रमुख विशेषता यह है कि वह व्यष्टि से समष्टि को तथा परमेष्टि को जोड़ती है। उसकी प्रत्येक प्रार्थना में विश्व बंधुत्व की भावना व्याप्त है। जो विपुल ज्ञान भंडार संस्कृत में है, उसे देश की प्रगति और मानवता के लिए उपयोग में लाया जा सकता है। पंडित नेहरू ने, 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में लिखा है कि "यदि कोई मुझसे पूछता है कि भारत के पास बहुमूल्य खजाना क्या है और इसके पास सबसे बड़ी धरोहर क्या है तो मैं बेहिचक कह सकता हूं कि वह खजाना 'संस्कृत' भाषा और उसमें निहित समस्त वांग्मय है। यह जब तक सक्रिय रहेगी और हमारे सामाजिक जीवन को प्रभावित करेगी, तब तक भारत का आधारभूत बुद्धिमत्ता बनी रहेगी" (अनुसूया, 2020)।

संस्कृत भाषा के संदर्भ में विद्वानों की यह धारणा सनातन काल से चली आ रही है कि वह सरस और मधुर ध्वनियों के शब्दार्थों से श्रोताओं को आनंद विभोर कर देती है। इसमें अंतर्निहित शक्तियों के कारण इसे देववाणी एवं दिव्य भाषा भी कहा जाता है। परिमार्जित या परिष्कृत भाषा का नाम ही संस्कृत है और विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में इसकी गणना मुख्य रूप से की जाती है। भारतीय, विदेशी विद्वान संस्कृत को सभी भाषाओं की जननी मानते हैं, परंतु भाषा वैज्ञानिकों ने संस्कृत, ग्रीक और लैटिन को तीन प्राचीनतम भगिनी भाषाओं के रूप में स्वीकार किया है (आर्य, 2018)।

1835 में मैकाले ने संस्कृत को कालबाह्य और अनुपयोगी भाषा बताते हुए उसकी शिक्षा को समाप्त दिए जाने का फतवा सुनाया था और उसकी नीतियों पर चलते हुए स्वाधीनता के बाद भी संस्कृत की भारतीय सरकारों द्वारा उपेक्षा भी की गई। पिछले डेढ़ सौ वर्षों की लगातार उपेक्षा और समाप्त किए जाने के तमाम प्रयासों के बावजूद संस्कृत एक जीवंत भाषा बनी हुई है। संस्कृत भाषा के महत्व पर शंका करना अपने अस्तित्व पर शंका करने के बराबर है, क्योंकि जब तक मानव है, संस्कृत का महत्व असीम है। संस्कृत भाषा अन्य भाषाओं की तरह केवल अभिव्यक्ति का साधन मात्र ही नहीं है, अपितु वह मनुष्य के संपूर्ण विकास की कुंजी है। संस्कृत केवल स्व-विकसित भाषा नहीं बल्कि संस्कारित भाषा है। मानव जाति के आदि स्रोत ग्रंथ को जानने के लिए संस्कृत का महत्व अनंत है। विश्व का सबसे प्राचीनतम उपलब्ध ग्रंथ 'ऋग्वेद' है। ऋग्वेद की भाषा विश्व के भाषाई अध्ययन में प्राचीनतम एवं महत्वपूर्ण स्थान रखती है। मैक्स मूलर ने इस संबंध में कहा है, "जब तक मानव अपने इतिहास में रुचि लेता रहेगा और जब तक हम अपने पुस्तकालयों तथा संग्रहालयों में प्राचीन युग की स्मृतियों के चिंतन को संजोए रहेंगे, तब तक मानव जाति के अभिलेखों से भरी-पूरी पुस्तकों की पंक्तियों के बीच पहली पुस्तक 'ऋग्वेद' ही रहेगी।" ऋग्वेद में भाषा तत्व के गंभीर सिद्धांत, दार्शनिक चिंतन, भाषा की परिशुद्धता, वैज्ञानिकता तथा सूक्ष्मता को जानना आवश्यक बताया गया है (अनुसूया, 2020)।

संस्कृति, संस्कार और मानव मूल्यों की जननी संस्कृत भाषा है, जिसमें संपूर्ण विश्व की अलौकिक ज्ञान संपदा समाई हुई है। संस्कृत देश की आत्मा है, व्यक्ति को काबिलियत देती है, उसे अपनी राह स्वयं तय करने की क्षमता प्रदान करती है। संस्कृत अध्ययन से असीमित रोजगार की संभावनाएं बनती हैं। संस्कृत जीवकोपार्जन के साथ समाज में सम्मानपूर्ण स्थान दिलाने में सक्षम है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत अब विद्यार्थियों को पहले से तय विषय चुनने की बाध्यता समाप्त कर दी गई है। इस नवाचारी पहल के माध्यम से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में संस्कृत भाषा और ज्ञान- संपदा के प्रसार की नई संभावनाओं की तलाश की जानी चाहिए। युवा पीढ़ी संस्कृत भाषा के अध्ययन-अध्यापन से वेदों, शास्त्रों,

दर्शनों, पुराणों तथा काव्य आदि साहित्य में उपलब्ध दुर्लभ ज्ञान- विज्ञान की संपदा प्राप्त कर लाभान्वित होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में अनुसंधान संस्कृति तथा अनुसंधान क्षमता को बढ़ावा दिया गया है। गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा का नया रास्ता खुला है। इसे संस्कृत भाषा के विस्तार और प्रसार का अभूतपूर्व अवसर बनाया जाना चाहिए। विश्वविद्यालयों को संस्कृत शिक्षा का शीर्ष अंतरराष्ट्रीय केंद्र बनाने की दिशा में प्रयास करना चाहिए। 2014 के बाद देश में राष्ट्रीय विचारों की सरकार के सत्ता में आने के बाद संस्कृत के उत्थान और सम्मान की आस जागृत हुई, जिसका प्रमाण केंद्र सरकार ने देश में एक साथ तीन नए केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालयों की स्थापना करके दिया है। सरकार संस्कृत को विज्ञान, सूचना तकनीक और संचार से जोड़कर प्रासंगिक व प्रमाणिक बनाने के लिए कृत संकल्पित है। इन प्रयासों से ही संस्कृत भाषा देश में अपनी महत्ता और खोयी प्रतिष्ठा को पुनः अर्जित कर पाएगी। आज भारत में 15 विश्वविद्यालयों और 500 से भी अधिक परंपरागत गुरुकुलों में संस्कृत का अध्ययन-अध्यापन होने के साथ ही जर्मनी, अमेरिका और ब्रिटेन जैसे विकसित देशों में भी संस्कृत भाषा स्नात्तक स्तर पर पढ़ाई जाती है। अमेरिकी अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, नासा संस्कृत के सभी स्वरों की वैज्ञानिकता और तथ्यात्मकता को स्वीकार कर चुका है।

'संस्कृति' से तात्पर्य उत्तम स्थिति से है। मनुष्य अपनी बुद्धि के प्रयोग से सदैव उन्नति करता आया है। दुर्भाग्य यह रहा है कि हमने राजनीति को सब कुछ मान लिया जबकि 'केवल पथ की साधना और संस्कृति उस पथ का साध्य' है और 'संस्कृत जीवन के वृक्ष का संवर्धन करने वाला रस' है। भारतीय समाज का एक हिस्सा भाषा चिंतन से विमुख है। हिंदी समाज को कई रूपों में जिसमें भाषा प्रमुख है, विभाजित करने की अंग्रेजी ने जो कोशिश की, वह अभी तक जारी है। भाषा विकृत हुई है। भाषा न सिर्फ ज्ञान की संवाहक है, बल्कि देश की उन्नति एवं प्रगति का द्योतक भी है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो भारतवर्ष के धर्म, दर्शन, विज्ञान, चिकित्सा आदि विषयों की भाषा संस्कृत ही है। वैश्वीकरण के इस दौर में बाजार ने ही इस कालखंड को बनाया, सजाया-संवारा और जरूरत पड़ने पर उजाड़ा भी। भाषा का वैविध्य भी बाजार को अपनी राह का रोड़ा लगने लगा। बाजार के लिए भाषा सिर्फ एक संचार का माध्यम थी। भाषा के संक्षिप्तीकरण और सूचनापरकता के नाम पर उसमें से अलंकार, कहावत, मुहावरों और अनेकार्थता को धीरे-धीरे समाप्त करने का प्रयत्न हो रहा है, क्योंकि बाजार केवल अपने उत्पाद से जुड़े अर्थ को ही संपोषित करना चाहता है किंतु आज वैश्विक उदारवाद के दौर में सारा विश्व यह स्वीकार कर चुका है कि संस्कृत को धर्म विशेष या राजनीतिक विचारधारा से जोड़ना मूर्खता है। इसे इसकी समृद्ध विरासत के लिए स्वीकार करना चाहिए जो संस्कृत भाषा में ही सन्निहित है। अपनी प्राचीन संस्कृति, समृद्ध ज्ञान परंपरा और अथाह वांग्मय से युक्त संस्कृत भाषा के समवहत रूप में ही भारत 'विश्वगुरु' था।

संस्कृत, वेड, वेदांग, दर्शनशास्त्र, काव्यशास्त्र के अध्ययन से ज्ञान प्राप्त करने और आत्मसात करने की विशुद्ध भाषा है। यदि उनकी वाणी संस्कृत नहीं, यदि दृष्टि संस्कृत नहीं, यदि मन संस्कृत नहीं है, तो संस्कृत पढ़ने का कोई औचित्य नहीं और जीवन में कोई उपलब्धि नहीं होगी।

बेशक संस्कृत की भूमिका संपर्क भाषा के रूप में नहीं है और आधुनिक जीवन शैली में भी कोई भूमिका नहीं है । भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में संस्कृत को भी सम्मिलित किया गया है। कुछ वर्षों से डीडी न्यूज़ द्वारा 'वार्तावली' नाम से संस्कृत कार्यक्रम भी प्रसारित किया जा रहा है, जिसमें हिंदी फिल्मी गीतों के संस्कृतानुवाद, सरल संस्कृत शिक्षण, संस्कृत-वार्ता और महापुरुषों के जीवन-वृत्त संस्कृत में, सुभाषित- रत्नों आदि का प्रसारण हो रहा है।

भारत में एक बड़ा तबका अब भी संस्कृत को धर्म की भाषा के रूप में देखता है, पर ऐसा नहीं है। धार्मिक साहित्य तो संस्कृत वांग्मय का छोटा सा हिस्सा है। हिन्दू, बौद्ध, जैन और सिख धार्मिक रचनाओं में भी संस्कृत की भूमिका है। इस परिप्रेक्ष्य में उसकी भूमिका बहुत व्यापक है । 1947 में स्वतंत्र होने के बाद से भारत एक आधुनिक संवैधानिक प्रशासनिक व्यवस्था के साथ एक नए राष्ट्र-राज्य के रूप में विकसित हो रहा है। आधुनिक विज्ञान की भाषा के रूप में अंग्रेजी हमारे लिए जितनी भी उपयोगी हो, पर अंत में हम पाएंगे कि किसी भी संस्कृति और समाज की मौलिकता उसकी अपनी भाषाएं ही देती हैं। यह तथ्य अगले कुछ दशकों में और ज्यादा शिद्दत से तब समझा जाएगा, जब हम महाशक्ति के रूप में विकसित हो चुके होंगे। तब हमें अपनी संस्कृति का ख्याल आएगा। भारत विविधताओं का देश है, यहां अनेक भाषाएं और कई तरह की संस्कृतियां हैं। राष्ट्रीयता के विकास में यही विविधता संस्कृत के कारण हमारी एकता में तब्दील हो जाती है। संस्कृति इस अनेकता को एकता में परिवर्तित करती है। भारतीय संस्कृति को अर्थ प्रदान करती है। संस्कृति, विचार-दर्शन और इतिहास का अध्ययन करने के लिए संस्कृत स्रोतों की मदद लेना जरूरी है। उसके संरक्षण के बारे में तो हमें सोचना ही चाहिए। संस्कृत को लेकर सामान्य भारतवासी के मन में जो गहरा सम्मान है, उसे बढ़ाने की जरूरत है। संस्कृत हमारे गौरव का प्रतीक है (जोशी, 2019)।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है और यह हमें विरासत से मिली है। संस्कृति शब्द किसी देश या समाज की पहचान होती है। व्यक्ति, समुदाय, समाज और राष्ट्र के निर्माण व विकास में संस्कृति की विशेष भूमिका रही है। संस्कृति हमारे सामाजिक जीवन को सदैव प्रभावित करती रही है। दुर्भाग्य यह रहा है कि हमने राजनीति को सब कुछ मान

लिया, जबकि 'केवल पथ की साधना' और संस्कृति 'उस पथ का साध्य' है। संस्कृति जीवन के वृक्ष का संवर्धन करने वाला रस है। संस्कृति का संचार और भाषा से गहरा संबंध है। भारतीय समाज का एक हिस्सा 'भाषा चिंतन' से विमुख है।

यहां यह सात सूत्र संस्कृति के वजूद को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं- पहला- परंपराओं को जानने की और युवाओं तक पहुंचाने की, दूसरा- भाषा और विचारों को आत्मसात करने की, तीसरा-परंपरागत नृत्य, संगीत, व्यंजनों को अगली पीढ़ी को सौंपा जाना, चौथा- संस्कृति और तकनीक को एक दूसरे से बांटना, पांचवा- समुदाय एवं समाज के अन्य सदस्यों के साथ समय बिताना, छठां- सामाजिक एवं राष्ट्रीय महत्व के उत्सवों का प्रबंधन एवं सहभागिता आवश्यक है।

संदर्भ सूची

परमार, डॉ. उर्वशी का लेख, 'संपूर्ण मानवता: मीडिया एवं मानस', कम्युनिकेशन टुडे, 2015, communicationtoday.net.

पटेल, केशव का लेख, 'भारतीय जीवन दृष्टि-ज्ञान संस्कृति और अध्यात्म की परिपाटी में संचार', The sameeksha Global: Multi-disciplinary journal in Hindi, volume -4, issue-1, 2020. प्रश्न

जोशी, डॉ. रामशरण का आलेख, 'राष्ट्रभाषा हिंदी और भारतीय संस्कृति' विश्व 2015, वर्ष-31, अंक -4, अक्टूबर 2015,

'तकनीक को संस्कार पर हावी न होने दें' जागरण डॉट कॉम, 15 सितंबर 2016।

कुमावत, हरेंद्र का आलेख, 'हिंदी का बाजार और बाजार की हिंदी' राजस्थान साहित्य अकादमी,www.rsaudoi.org.

उपाध्याय, गिरीश का लेख, 'संचार: ज्ञान का साधारणीकरण, 'मीडिया नवचिंतन, जनवरी-मार्च, 2016

पटेल, केशव का लेख, उपयुक्त,

उपाध्याय, गिरीश का लेख, उपर्युक्त,

पटेल, केशव का लेख, उपर्युक्त,

आर्य, डॉ. वेदज्ञ का लेख, 'संस्कृत, संस्कार और संस्कृति', गगनांचल, मार्च-अगस्त, 2018, पृष्ठ सं. 23-24.

गुप्ता, डॉ. खुशबू का लेख, 'कोरोना काल में भारतीय संस्कृति की जीवंतता', 12 मई, 2020, पांचजन्य।

संस्कृति को उन्नत बनाने में भाषा श्रेष्ठ माध्यम है, नई दुनिया, 30 जून 2020।

अनुसूया, डॉ. सोनिया का लेख, 'संस्कृत सिर्फ भाषा नहीं संस्कृति विज्ञान, तार्किक क्षमता और अन्य भाषाओं की प्राण भी है', 9 अगस्त 2020, ऑपइंडिया, www.hindi.opindia.com

आर्य, डॉ. वेदज्ञ का लेख, 'संस्कृत, संस्कार और संस्कृति', उपर्युक्त

अनुसूया, डॉ. सोनिया का लेख, उपर्युक्त

जोशी, प्रमोद का लेख, 'सरकार द्वारा संस्कृत भाषा के प्रति दिखाए जा रहे उत्साह के मायने क्या हैं', 28 जून 2019, स्वराज,www.hindi.sawarajyamag.com